International Referred Research Journal,May,2011 ISSN-0975-3486 RNI: RAJBIL 2009/30097 VOL-II *ISSUE 20

शोध पत्र-हिन्दी

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी अस्मिता

May, 2011

* क. रोमी जायसवाल

* सहायक प्राध्यापक हिन्दी, कमला नेहरू महाविद्यालय, कोरबा (छ.ग.)

आधुनिक हिन्दी उपन्यासों की नवीनतम धारा को प्रयोगवादी उपन्यास या आधुनिकता बोध का उपन्यास भी कहा जाता है। इन उपन्यासों में औद्योगीकरण बदलते हुए परिवेश, भ्रष्ट व्यवस्था, संत्रास, कुंठा, विद्रोह के स्वर प्रमुख रूप से मुखरित हुए हैं। आधुनिकता का संबंध मनुष्य की चेतना के विकास से है। यह एक मानसिक परिघटना है। तर्क और विवेक इसका आधार है। खुले लोकतांत्रिक महौल में ही यह अपनी अभिव्यक्ति कर सकती है।

महिलाओं ने ऐसी ही परिस्थिति में अपने ढंग से चीजों को देखने और समझने, उनको अभिव्यक्त करने और उनके पक्ष में वातावरण बनाने के लिए सामाजिक, राजनीतिक पहल करने की शुरूआत की। इसलिए यह बेहिचक कहा जा सकता है कि हर प्रतिक्रियावादी और कट्टरपंथी उभार से सबसे ज्यादा नुकसान उन्ही का हुआ है। एक तानाशाही या धर्मसत्ता वाली व्यवस्था में स्त्री के स्वतंत्र अधिकारों या नारीवाद जैसी आधुनिक विचाारधारा का अस्तित्व भी नहीं हो सकता है। ऐसा कहीं भी हुआ है, इसका कोई उदाहरण नहीं है। जबकि स्त्रियों का अगर एक स्वतंत्र इकाई के रूप में अस्तित्व हो सकता है। तो यह नारीवादी विचारधारा के साथ ही हो सकता है।नारीवाद नें पूरे सभ्यता के इतिहास में पहली बार नारी की दुष्टि से दुनिया को देखने और एक वैकल्पिक विश्व दृष्टि विकसित करने का काम किया है। सौन्दर्य और मर्यादा, कर्त्तव्य और अधिकार, इच्छा और आकांक्षा आदि के इसने वैकल्पिक मानदण्ड विकसित किए है। इन मानदण्डों को अधिक से अधिक लोकप्रिय बनाने और उन्हे स्वीकृति दिलाने के लिए यह विचारधारा दुनिया भर में संघर्ष कर रही है।

यों तो प्रेमचंद युग में ही हिन्दी कथा रचना के क्षेत्र में महिलाओं का प्रवेश हो चुका था। किन्तु स्वतत्रंता प्राप्ति के बाद नारी जागरण और स्त्री शिक्षा के व्यापक प्रचार–प्रसार के फलस्वरूप इस क्षेत्र में महिला रचनाकारों की एक सशक्त पीढी का उदय हुआ जिनमें कृष्णा सोबती, शशि प्रभा शास्त्री, दिनेश नंदिनी डालमिया, शिवानी, मन्नु भंडारी,उषा प्रियंवदा, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा प्रमुख महिला उपन्यासकार है। जिन्होंने अपने लेखन से साहित्य जगत में नई क्रान्ति का दौर शुरू किया। उनकी लेखनी में नारी मन की अभिव्यक्ति प्रमुख रूप से हुई है। स्वातंत्रयोत्तर महिला उपन्यासकारों में मैत्रेयी पुष्पा का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में सामाज के हर क्षेत्र में फैले अत्याचार, अन्याय एवं शोषण के शिकार बने विभिन्न वर्गों के गरीब शोषित बहुसंख्यक लोगों की तथा उनके आंसुओं में घुली चीत्कार को वाणी देने का संकल्प किया है। लेखिका नें समाज के कुम्भीपाक को कोने–कोने से ढूंढकर निकालने एवं आसमान में छाये विभिन्न सम्प्रदायों के वैमनस्य रूपी अंधेरे से मानव को बचाने का साहसिक कार्य किया है। बिना किसी वाद प्रतिबद्धता के निष्पक्ष सीधी सपाट बात कहने की हिम्मत मैत्रेयी पुष्पा जैसी आधुनिक लेखिकाओं में परिलक्षित होता है। इनके उपन्यास के सभी पात्रों का आक्रोश चाहे आर्थिक विषमता से जन्मा हो, धार्मिक अंधविश्वास, पाखण्डों के विरूद्ध पनपा हो या राजनीतिक आपराधिक परिवेश के प्रति जागा हो वे अपना रास्ता तलाश ही लेते है। अपने वजूद की रक्षा में आड़े आने वाली समस्त संकीर्ण सामाजिक हदों को तोड़कर नये स्वच्छन्द युग का सपना ही मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में देखा जा सकता है ।

मैत्रेयी पुष्पा नें अपनी रचनाओं की ताजगी और उष्मा से सहसा हिन्दी जगत का ध्यान आकृष्ट कर लिया है। अबतक उनके स्मृति दश (1999), बेतवा बहती रही (2000) कही इसुरी फाग (2004)तथा त्रिया हठ (2005) आदि कई उपन्यास प्रकाशित हो चुके है। मैत्रेयी पुष्पा नें अपने उपन्यासों में नारी संघर्ष का चित्रण किया है। उनका उपन्यास ''अल्मा कबूतरी'' कबूतरा जाति की कथा मात्र नहीं है, वह समकालीन राजनीति की दिशाहीनता, अपराधीकरण सत्ता संघर्ष तथा जीवन मूल्यों के घोर पतन की यथार्थ गाथा भी है। सामाजिक जड़ता को तोड़ती और पारंपरिक रूढ़ियों को चुनौती देती हुई अल्मा जैसी दलित नारी की अपराजेय जिजीवषा समकालीन नारी चेतना को शक्ति और प्रेरणा देने वाली है।

''अल्मा हमारी जिंदगानी ऐसी ही है बस । अपना दुख तुम खोलकर कह दो, दबाकर रखोगी तेा बंद मुंह के घाव की तरह भीतर ही भीतर जहर फैलेगा। जहरीली चीज को लोग थूक देते है ।''(1)नारी को स्वतंत्र होने के लिए क्यों समाज के साथ संघर्ष करना पड़ता है ? आखिर स्त्री भी तो समाज का ही अंग है तो फिर उसे यातना और तिरस्कार का सामना क्यों करना पड़ता है ? ये कैसा विरोधाभास है ? कैसी प्रताड़ना है कि हमारी भाषा की सारी अश्लील गाालियाँ स्त्री को लक्ष्य करके ही दी जाती हैं । मैत्रेयी पुष्पा हंस में प्रकाशित अपने लेख ''हमसे जाति पूछते हो'' में लिखती हैं कि –

''गौरतलब यह है कि दलितों की अपनी जातियाँ होती है, मुसलमानों का अपना धर्म होता है और पिछड़ी जातियां तो जातिगत समुदाय होती ही है, मगर स्त्री वर्ग का अपना ऐसा कुछ नहीं होता, उसका समाज शास्त्र तो सबसे अलग बनाया गया है । कितनी गुलामिया खत्म हुई, कितनी आजादिया आई लेकिन औरत का बंधन होना अब भी शेष है।'' (2) तात्पर्य है कि स्त्री सदैव ही पुरूष प्रधान सामाजिक व्यवस्था से शोषित होती आयी है। स्त्री सदैव सापेक्ष रही है, जब–जब समाज की स्त्री के प्रति जैसी दृष्टि रही है स्त्री का वही रूप उभरकर सामने आया है। मेरे अनुसार यह बात विभिन्न धर्मों में भी लागू है। विभिन्न धर्मों में जब तक स्त्री धार्मिक रूढ़ियों की कठोरता तथा परंपराओं की जड़ता से मुक्त नहीं होती है तब तक उसकी पूर्ण स्वतंत्रता की कल्पना अधूरी ही मानी जाएगी।

उनके उपन्यास इदननमम में भी नारी की विद्रोहिणी चेतना को व्यापक सामाजिक परिवेश में उभारा गया है। नारी पात्रों का शोषण यहां भी है किन्तु यहां वे अपेक्षाकृत सक्रिय और अपने ढंग से पुरूष वर्चस्व को चुनौती देती है। उपन्यास में नारी चेतना को व्यापक सामाजिक परिवेश में उभारा गया है। यहां देश के स्वतंत्र होने के बाद का पूरा सामाजिक यथार्थ अपने अर्न्तविरोधों के साथ विद्यमान है।

'चाक' कथा में भी लेखिका ने नारी की विद्रोहिणी चेतना और नारी शक्ति को जगाने का सफल प्रयास किया है । प्रसिद्ध कथाकार राजेन्द्र यादव ने भी कहा है कि –''चाक सामन्ती समाज के भीतर व्याप्त हिंसा और स्वार्थों की तकराहट की प्रमाणिक कहानी है । इस समाज का तानाबाना हिंसा और सेक्स से बना है। मैत्रेयी इन दोनो को ही एक कथाकार की निगाह से पात्रों के आचार विचार और सोच के रूप में प्रभावशाली ढंग से पकड़ती है। चाक में बिना बड़बोलेपन के उन्होंने गांव की स्त्री की जिस चेतना का विकास किया है। वह उपन्यास कला पर उनकी पकड़ को रेखांकित करता है ।''(3)

''कही ईसुरी फाग में भी पुरूषों द्वारा स्त्रिओं पर सदियों से किए जाने वाले अत्याचारों का पर्दाफाश किया गया है । उपन्यास में जगह–जगह ईसुरी के फाग उद्धृत है । ऐसा लगता है कि लेखिका को ईसुरी के रूप में अपनी सोच और भावनाओं का समर्थक मिलगया है।''

'त्रिया हठ' भी 'उर्वशी' नाम की विधवा लड़की की कथा है । उर्वशी का अपराध कुल इतना है कि वह अपनी जिन्दगी अपने ढंग से जीना चाहती है । यही उसका हठ है –''वह बात जिसकी आनी कोई आवाज नहीं, मगर उसी से बहुत सी औरतों का जीवन जुड़ता और टूटता है। जो टूटता है वही जिंदगी का दर्द पैदा करता है ।'' (4)'बेतवा बहती रही' एक गरीब परिवार में जन्मी बहुत कम पढ़ी–लिखी स्त्री उर्वशी की संघर्ष गाथा है। उपन्यास का अंतिम वाक्य उर्वशी की अन्तर्दाह की कथा बन गया है –''आसमान जल उठा, जल उठी धरती और सारे दाह को स्वयं में समटे आग की लपटी के साथ–साथ धधकती बेतवा क्रुद्ध भाव से बहती रही।''(5) उर्वशी की कथा के साथ–साथ लेखिका ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नेताओं की ओछी राजनीति, अनैतिक आचरण, जनता का शोषण, अराजकता आदि का प्रभावी चित्रण किया है ।

''मैत्रेयी पुष्पा को हिन्दी अकादमी द्वारा साहित्य कृति सम्मान, 'फैसला' कहानी के लिए कथा पुरस्कार, सन् 1995 में उ.प्र. साहित्य संस्थान द्वारा 'बेतवा बेहती रही' के लिए प्रेम चंद सम्मान, उपन्यास ' इदननमम' को नजंनागुडु तिरूमालाबा पुरस्कार म.प्र. साहित्य परिषद् द्वारा वीर सिंह देव पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है । जो उनकी साहित्यिक प्रतिभा को समाज के सम्मुख लाता है ।''मैत्रेयी पुष्पा हिन्दी की एक ऐसी सशक्त नारीवादी लेखिका है जिन्होंने अपने लेखन में स्त्रियों की बदलती हुई स्थिति, उसकी यातनाओं, संघर्षों को स्त्रीत्ववादी परिप्रेक्ष्य में रखकर प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों में स्त्री की एक अलग ही छवि उभर कर सामने आई है। स्त्री की ऐसी छवि जो आज तक हाशिए पर रही है। उनके उपन्यास अंचल विशेष के रंग में रंगे होने पर भी आंचलिक नहीं है। उनमें गांव का मनुष्य अकेला नहीं है। उसके साथ प्रकृति है, पारंपरिक संस्कार है, जातीय स्मृतियां और पूरी लोक संस्कृति हैं। उनके नारी पात्र अधिक सक्रिय, सजग और प्रभावी हैं। उनके उपन्यासों में नारी चेतना मूक विद्रोह से चलकर मुखर सामूहिक संघर्ष की दिशा में अग्रसर होती हुई दिखाई देती है और सबसे बड़ी बात यह है कि उनमें सच कहने का साहस है। उनकी क्रांति–चेतना किसी विचारधारा के दायरे में कैद न होकर अनुभव की आंच और अनुभूति के ताप से प्रेरित है।

संदर्भ ग्रंथ

1. अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली पटना, वर्ष 2000 पृ.सं.–371. 2. हंस मासिक पत्रिका, राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. नयी दिल्ली 1996. 3. चाक, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली पटना, वर्ष 2004, भूमिका । 4. त्रिया हठ मैत्रेयी पुष्पा, किताब घर प्रकाशन नयी दिल्ली वर्ष 2009 पृ.सं.–95. 5. बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा, किताब घर प्रकाशन नयी दिल्ली वर्ष 2010 पृ.सं.–150.